8209837844
www.ugc-net.com

UGC NTA NET (हिन्दी साहित्य)

साहित्यशास्त्र (<u>औचित्य सिद्धांत</u>)

ईकाई-3 भाग-9

By Jyoti
(Hindi Educator)

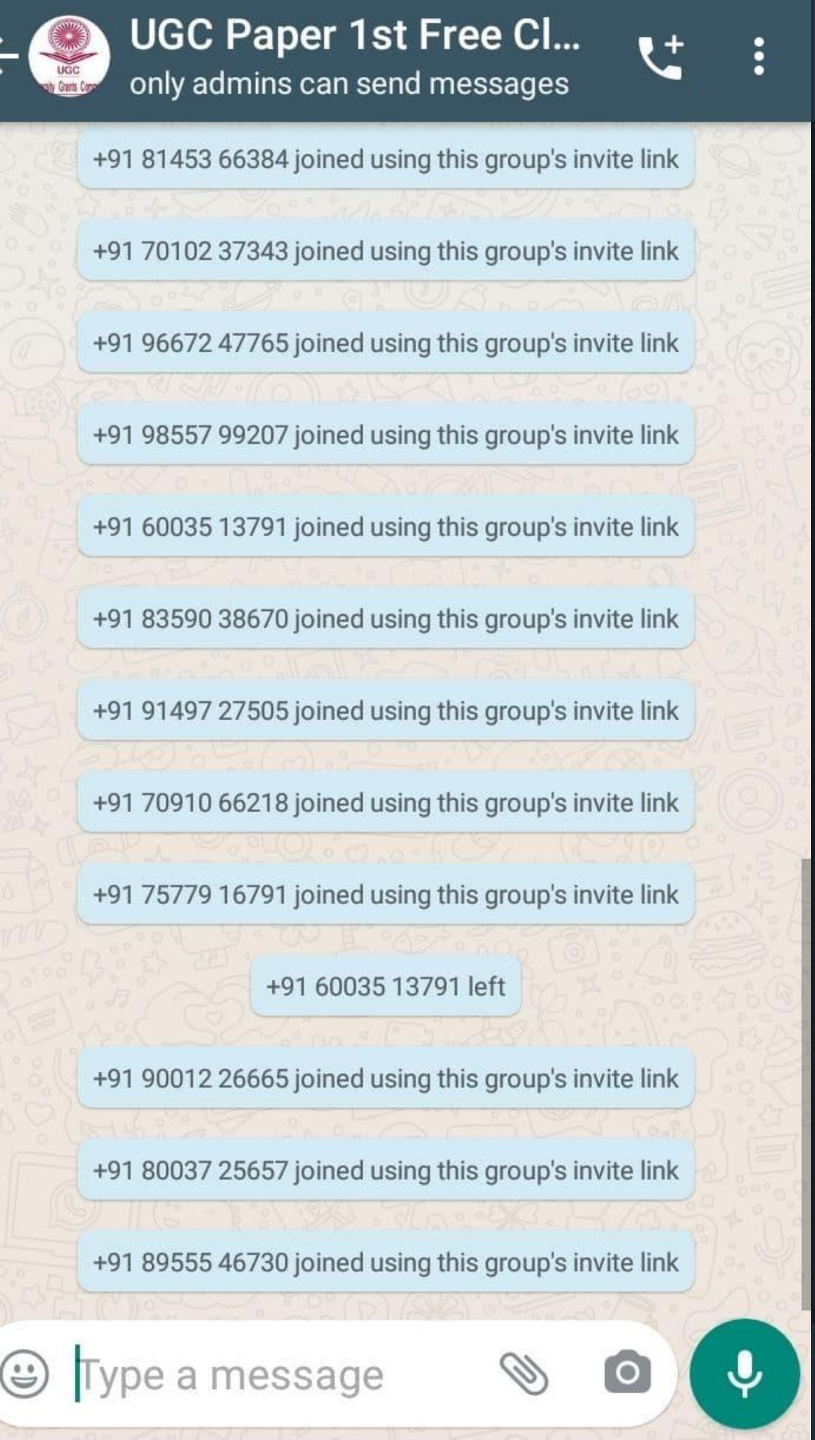
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
Broadcast

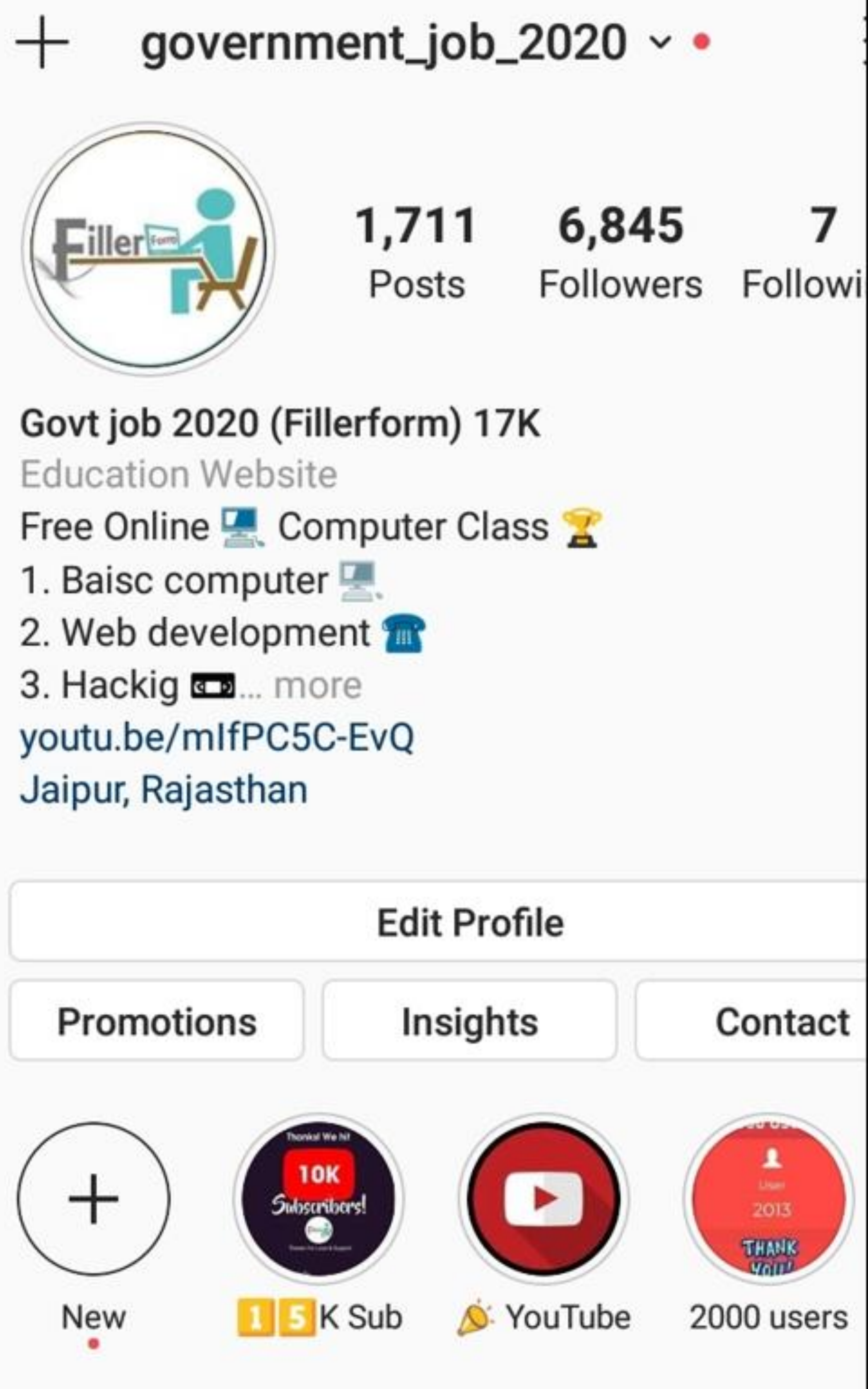
government_job_2020
1,711
Posts
6,845
Followers
7
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
15K Sub
YouTube
2000 users

UGC-NET 2022

09:00 AM
Current GK

11:00 AM
1st Paper

02:00 PM
1st Paper

12:00 PM
Hindi-2nd paper

01:00 PM
History-2nd paper

03:00 PM
Commerce – 2nd

09:00 PM
Management

January
10

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

UGC-NET 2022

12:00 PM
Hindi-2nd paper

01:00 PM
History-2nd paper

03:00 PM
Commerce – 2nd

04:00 PM
Political sciences

06:00 PM
Sanskrti

08:00 PM
Computer Sce.

09:00 PM
Management

JANUARY 17

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

Filler Form
LATEST UPLOADS
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
"Level of Teaching"
11:00 AM Level Of Teaching | Teaching
11:00 AM Level Of Teaching | Teaching Aptitude By Jitendra Goswami | NET
LEARNING MATERIAL
Quizzes
Notes
Sample Papers
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
5000+MCQ+PYQ
Free Books
100% OFF
fillerform

8209837844
www.ugc-net.com

हिन्दी सिलेबस

इकाई – III

साहित्यशास्त्र

काव्य के लक्षण, काव्य हेतु और काव्य प्रयोजन।
प्रमुख संप्रदाय और सिद्धान्त – रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य।
रस निष्पत्ति, साधारणीकरण।
शब्दशक्ति, काव्यगुण, काव्य दोष
प्लेटो के काव्य सिद्धान्त।
अरस्तू : अनुकरण सिद्धान्त, त्रासदी विवेचन, विरेचन सिद्धान्त।
वड्र्सवर्थ का काव्यभाषा सिद्धान्त।
कॉलरिज : कल्पना और फैंटेसी।
टी.एस.इलिएट : निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त, परम्परा की अवधारणा।
आई.ए.रिचड्र्स : मूल्य सिद्धान्त, संप्रेषण सिद्धान्त तथा काव्य-भाषा सिद्धान्त। रूसी रुपवाद।
नयी समीक्षा। मिथक, फन्तासी, कल्पना, प्रतीक, बिम्ब।

औचित्य सिद्धांत

8209837844

www.ugc-net.com

औचित्य सिद्धांत

औचित्य : अर्थ एवं स्वरूप :- औचित्य शब्द का अर्थ है —उचित का भाव कहा | भी गया है —"उचितस्य भाव: औचित्यम्" |

आचार्य क्षेमेंद्र ने उचित शब्द का अर्थ 'अनुरूप' या 'जचना' माना है | जो वस्तु जिसके अनुकूल होती है उसे प्राचीन आचार्यों ने उचित कहा है | अतः उचित का भाव ही औचित्य है

आचार्य क्षेमेंद्र ने औचित्य सिद्धांत का प्रवर्तन किया | यह सिद्धांत आने का दृष्टियों से महत्वपूर्ण है | आचार्य क्षेमेंद्र लिखते हैं —"औचित्य रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम् |"अर्थात रससिद्ध काव्य का प्राण औचित्य ही है |

क्षेमेन्द्र से पूर्व औचित्य की परंपरा

(1) भरत मुनि — आचार्य भरत ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में कहीं पर भी औचित्य सिद्धांत की चर्चा नहीं की लेकिन व्यवहार में उन्होंने औचित्य पर बल अवश्य दिया | इस पुस्तक में वे कई बार औचित्य तथा अनौचित्य शब्दों का प्रयोग करते हैं | वे काव्य में औचित्य बनाए रखने के लिए अनौचित्य से बचने की प्रेरणा देते हैं

(2) भामह — अलंकारवादी आचार्य भामह ने भी स्पष्ट कहा है कि जिन बातों को काव्य दोष कहा जाता है यदि काव्यादि में उनका औचित्यपूर्ण प्रयोग किया जाए तो वे दोष ने बनकर गुण बन जाया करते हैं | एक स्थान पर वे कहते हैं कि विशेष सन्निवेश अर्थात औचित्यपूर्ण विधान होने पर दोषपूर्ण उक्ति भी उसी प्रकार शोभाजनक हो जाती है सुंदर नारी के नेत्रों में काजल भी शोभित होता है —

"कान्ता विलोचनन्यस्तं मलीमसमिवांजनम्"

(3) दण्डी — आचार्य दंडी ने औचित्य के स्थान पर 'दोष-परिहार' शब्द का प्रयोग किया है | 'दोष-परिहार' का कारण कवि कौशल है | अनुचित संयोग से दोष उत्पन्न होते हैं

(4) रुद्रट — संस्कृत काव्यशास्त्र में रूद्रट पहले आचार्य हैं जिन्होंने यशोवर्मन के पश्चात 'औचित्य' शब्द का स्पष्ट प्रयोग किया | उन्होंने अपनी रचना 'काव्यालंकार' के प्रथम अध्याय में छन्दौचित्य, द्वितीय में रीति तथा वृत्ति औचित्य, तृतीय में अलंकारौचित्य, षष्ठ में वक्ता तथा विषय संबंधी औचित्य तथा एकादश अध्याय में जाति, वंश विय, विद्या, वित्त, देश-स्थान तथा पात्रादि के औचित्य के बारे में चर्चा की है |

(5) आनंदवर्धन — यशोवर्मन तथा रूद्रट के पश्चात आनंदवर्धन ने भी 'औचित्य' शब्द का स्पष्ट उल्लेख किया | उन्होंने काव्य के सभी तत्वों अलंकार, रीति, वृत्ति तथा गुण आदि की उपयोगिता रसाभिव्यक्ति में सहायक होने में स्वीकार की |

(6) कुंतक :- वक्रोक्तिजीवितकार कुंतक ने भी काव्य के दो प्रधान गुणों में एक औचित्य माना है, दूसरा है सौभाग्य|

(7) भट्टलोल्लत :- इन्होंने महाकव्य मे रस निष्पत्ति के लिए औचित्य को महत्वपूर्ण माना है|

(8)राजशेखर :- ये गुण और दोष की स्थिति कवि के अच्छे विवेक पर माने है|

(9) महिमभट्ट: - इन्होंने " व्यक्ति विवेक" मैं औचित्य के दो भेद का उल्लेख किया शब्दौचित्य या अर्थोचित्य|

8209837844

www.ugc-net.com

क्षेमेन्द्र और औचित्य

क्षेमेन्द्र अभिनवगुप्त के शिष्य थे|

"कंठे मेखलया नितम्ब फलके तारेण हारेण वा |
पाणौ नूपुरबंधेन, चरेण केयूर पाशेन वा |
शौर्येण प्रणते रिपौ करुणया नायान्ति किं हास्यातामुऔचित्येन बिना रुचिं प्रतुनते नालंकृतिनो गुणा: ||"

अर्थात किसी सुंदरी के गले में मेखला, नितंबों पर हार, हाथों में नूपुर और पांवों में केयूर जैसे आभूषण हास्य ही उत्पन्न करेंगे | इसी प्रकार से शरण में आए किसी व्यक्ति पर वीरता दिखाना या दंड देना, शत्रु पर करुणा करना सर्वथा अनुचित है और ऐसा करने वाला व्यक्ति लोगों के उपहास का पात्र और निंदनीय होगा |आचार्य क्षेमेंद्र ने बताया कि काव्य में चमत्कार और चारुता उत्पन्न करने का प्रमुख कार्य औचित्य का है | उन्होंने रस की उत्पत्ति का कारण भी औचित्य को ही बताया | वह रस और औचित्य का सम्बन्ध आत्मा और जीव का संबंध मानते हैं | सच्चाई तो यह है कि रस और औचित्य एक दूसरे पर निर्भर हैं | औचित्य के बिना रस की प्रतीति नहीं होती | इसी प्रकार बिना रस के औचित्य की स्थिति नहीं है |

" रस आत्मा है और औचित्य जीवन "

8209837844 www.ugc-net.com

क्षेमेन्द्र- परवर्ती आचार्य और औचित्य

(1) मम्मट :- इनकी दृष्टि में औचित्य के आधार पर गुण दोषों को पहचान जा सकता है |

(2) पंडित विश्वनाथ :- औचित्य को मम्मट के भाति गुण दोष तक सीमित रखा |

(3) पंडित जगन्नाथ :- इन्होंने अनौचित्य को रसभंग करण माना है |

पाश्चात्य काव्यशास्त्र और औचित्य

अरस्तू :- इन्होंने " पोएटिक्स " मैं चार प्रकार के औचित्य का वर्णन किया है

लोंजाइनस :- " On the Sublime " मैं दो प्रकार के औचित्य बताते हैं होरेस : - "काव्या कला" प्रंबंध मैं तीन उपदेश दिए| एक है (काव्य मैं औचित्य पर सदा ध्यान रखना

8209837844

www.ugc-net.com

औचित्य के भेद

आचार्य क्षेमेंद्र ने अपनी रचना 'औचित्य विचार चर्चा' में 27 प्रकार के औचित्य बताएं हैं | इनमें से 6 आनंद वर्धन के बताए हुए हैं और 21 प्रकार के अन्य उदाहरणों की उदभावना क्षेमेन्द्र ने की है

(1)पदौचित्य
(2) वाक्यौचित्य
(3) प्रबंधौचित्य
(4) गुणौचित्य
(5)अलंकारौचित्य
(6) रसौचित्य
(7) तत्त्वौचित्य
(8) स्वभावौचित्य
(9) प्रतिभा-औचित्य
(10) सत्त्वौचित्य
(11) संघटनौचित्य
(12) नामौचित्य
(13) लिंगौचित्य
(14) वृत्तौचित्य

क्या औचित्य काव्य की आत्मा है?

8209837844

www.ugc-net.com

प्रश्न :- किस आचार्य के सिद्धांत को रसनिष्पति के संदर्भ में अनुमानवाद की संज्ञा दी?

धन्यवाद....

For More Information

8209837844

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com